भारतीय समकालीन कला में मानवीय व अमानवीय आवेगों का चित्रण

डॉ0 कविता सिंह
सहा0 प्रोफ़े0 (स्टेज–III), सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला

सारांश

इस शोधपत्र में मानवीय तथा अमानवीय आवेगों, मनोवेगों, वेदनाओं, चिंताओं व चिंतन का पशु–पक्षियों व जानवरों की आकृतियों व छवियों को प्रयोग करने वाले चार सुप्रसिद्ध भारतीय समकालीन चित्रकारों की कला यात्रा का वर्णन है जिसमें उनके चिंतन व मंथन पर बाखूबी रौशनी डाली गई है। इन चित्रकारों के चित्रों में पाए जाने वाले चिन्हों, आकारों व अर्थों की गहराई तक पहुँचकर उनके मन–मस्तिष्क का विश्लेषण किया है। साथ–साथ उनकी कला शैली और अनूठे प्रयोगों पर भी भरपूर नज़र रखते हुए उनके वास्तविक विचारों व रहस्यमयी गाथाओं को समझने का पूर्ण प्रयास है क्योंकि इन सभी चित्रकारों ने मानव आकृतियों के साथ विभिन्न प्रकार के सृष्टि में विचरते पशु–पक्षियों का भी भावपूर्ण उपयोग किया है।

मूल शब्द– *भारतीय समकालीन कला, भारतीय आदिवासी कला, विष्णुधर्मोत्तर पुराण, ड्राइंग, तैल्य चित्र, ऐक्रेलिक, वॉटरकलर, अमूर्त कला, पशु–पक्षी, जानवर, जीव–जंतु, सतीश गुजराल, मंजीत बावा, आधुनिकतावाद, लोक–कथा, गोगी सरोज पाल, महिषासुरमर्दिनी, कामधेनु, हठयोगिनी, सतवंत सिंह, आवेग, मनोवेग।*

शोध पत्र का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार हैः
डॉ0 कविता सिंह

भारतीय समकालीन कला में मानवीय व अमानवीय आवेगों का चित्रण

शोध मंथन, जून 2018,
पेज सं0 34–39

Article No. 6
http://anubooks.com
?page_id=581

प्रस्तावना

चिली के सुप्रसिद्ध कवि **'पाब्लो नरूदा'** ने एक साक्षात्कार ने कहा था, ''कोई घटना या विचार एक मानव के लिए मिथ्या हो सकता है तो वही दूसरे मानव के लिए एक वास्तविकता।'' उन्होंने अपनी एक कविता में इधर–उधर आकाश ने उड़ रही एक कमीज़ का वर्णन किया है जो एक स्त्री की आत्मा दिखाने का प्रयास है। एक भारतीय टी.वी. साक्षात्कारकर्त्ता ने अपनी वार्तालाप के बीच उनसे पूछा था कि ''क्या यह उड़ती कमीज़ सच्चाई है या मिथ्या है?'' नरूदा ने उत्तर दिया की ''जैसे भगवान गणेश की छवी भारतीयों के लिए वास्तविकता हो सकती है तो वही गैर–भारतीयों के लिए मिथ्या।'' ऐसे तत्व अनेक चित्रकारों, कवियों और लेखकों की कृतियों में अकसर पाए जाते हैं जो विभिन्न सांस्कृतिक विधाओं व पृष्ठभूमि से उत्पन्न होते हैं। हर चित्रकार अपने मनोवेग तथा सांस्कृतिक व धार्मिक स्थितियों के कारण अपने ही अनूठे चिन्ह घड़ता है जो उसकी कलात्मक पृष्ठभूमि का दर्पण होते हैं। हर किसी चित्रकार को इस दुनिया में बिखरे हुए बेअंत दृश्यों व चिन्हों में से अपने मनोवेगों तथा कलात्मक निपुणताओं व आवश्यकतायों के अनुसार चुनने की पूरी स्वतंत्रता है ताकि एक कलाकार अपने सूक्ष्म विचारों, वेदनाओं, मानसिक बाधाओं तथा सामाजिक तनावों का अपनी ही प्रिय शैली में चित्रण कर सके। कुछ चिन्ह व तत्व मन लूभावने हो सकते हैं तो कुछ अप्रिय तथा हैरतअंगेज़। इस प्रकार चित्रकार अपने दर्शकों को अपनी कलाकृतियों की ओर आकर्षित करते हुए अपनी कला यात्रा, वेदनाओं व दिव्य तथा दार्शनिक विचारों में भागीदार बना सकते हैं।

चिरकाल से ही मानव वातावरण में विचरते जीव–जंतुओं, पशु–पक्षियों व जानवरों की छवि का उपयोग अपनी कलाकृतियों में करता आ रहा है जिनसे वह अपने भाव, विचार, अपने दुःख–दर्द, अपने खुशी व ग़म तथा अपनी हार–जीत का वर्णन कर रहा है। इस तरह विभिन्न प्रकार के जानवरों की छवि का चित्रण करते हुए अपने अनेका अनेक मानसिक व शारीरिक अनुभवों का प्रगटावा अनूठे ढंग से कर रहा है। भारतीय पुरातन कला, आदिवासी कला तथा हिन्दू धर्म में हम देखते है कि हर देवी–देवता का वाहन भी कोई न कोई जानवर या पक्षी ही होता है जो इन देवताओं की शक्ति व मान्यताओं का भावपूर्ण दर्शन करवाता है जैसे कि शेर पर सवार देवी दुर्गा, मगरमच्छ पर सवार माता गंगा, उल्लू पर सवार माता लक्ष्मी, गरूड पर सवार भगवान विष्णु, नंदी पर सवार महादेव शिव तथा चूहे पर सवार सबके प्रिय भगवान गणेश। आदिमानव के चित्रों में भी हर प्रकार के पशु –पक्षी, जानवर तथा जल में रहने वाले व धरती पर रेंगने वाले जीव–जंतुओं का चित्रण बाखूबी से देखा जा सकता है।

किन्तु भारतीय समकालीन कला के संदर्भ में रोचक तथा सूक्ष्म भावों को प्रगट करने हेतू भी अनेक प्रसिद्ध कलाकारों ने इन जीव–जंतुओं का प्रयोग करते हुए उच्च कोटी की कलाकृतियाँ उकेरने में सफलता प्राप्त की है। खास तौर पर मानव के मन में छिपे वहशी मनोवेगों को कैनवस पर उकेरते हुए अद्‌भुत ढंग से सच्चाई के साथ दर्शकों तक पहुँचाने का भरपूर प्रयास किया है। आखिर पूर्ण सत्य तो यह है कि मानव भी तो एक जीव है दूसरे सहजीवों की तरह। एक बात ज़रूर है की मानव अपनी बुद्धि की क्षमताओं के बल पर अपने आवेगों व वेदनाओं का समय व रूचि अनुसार नाटकिय ढंग से बदलाव कर सकते हैं किन्तु जानवर, जीव–जंतु, पशु–पक्षी इत्यादि इस निपुणता में मानव से पीछे हैं तथा अपने सच्चे विचारों का ही प्रदर्शण करते हैं। चित्रकार अपने

विचारों का मंथन करते हुए अपने प्रिय जीवों की भौतिक छवि को अपनी सूक्ष्म विचारधारा में शामिल करते हैं जिस कारण उनके चित्रों में नयापन व कलात्मक आश्चर्यनजक प्रवाह का संचार होता है। हर किसी कलाकार को किसी न किसी जीव में खास रूचि होती है जो उसके विचारों का वाहन बन जाता है।

दृश्य विशेष शब्दावली की बात **'विष्णुधर्मोत्तर पुराण'** के **'चित्रसूत्र अंक'** में कला के चार प्रमुख गुणों का वर्णन है जिसमें रेखा, आल्लेखन, टोनल विभिन्नता तथा धूप–छांव की मान्यता एक अच्छी रंग–योजना के साथ एक उच्चस्तरीय कलाकृति का निर्माण करने में सहायक होते हैं।[1] अकसर यह पाया जाता है कि कई समकालीन चित्रकार **'ड्राइंग'** में निपुणता पर इतना ध्यान नहीं देते जितना पुरातन समय में कला आर्चाय तथा कला विद्यार्थी देते थे। इस शोधपत्र में चुने गए चित्रकार इसलिए संवेदनशील और निपुण हैं क्योंकि वह आज भी पुरातन कला तत्वों के अभ्यास से ही अपनी दिनचर्या शुरू करते हैं और रेखा–चित्र व अन्य माध्यमों जैसे कि तैल्य चित्र, ऐक्रेलिक, वॉटरकलर व कई अन्य नवीनतम शैलियों में माहिर हैं और अपने विचार सच्चाई व ईमानदारी से सहज ढंग से व्यक्त कर सकते हैं। यह चित्रकार **'ड्राइंग'** को एक अलग पूर्ण रचना–पद्धति मानते हैं जिसमें गहन साधना व अभ्यास की आवश्यकता होती है। इन सब चित्रकारों में एक और समानता यह है कि पशु–पक्षियों व अन्य जीवों से इनको बेहद लगाव है और अक्सर वे उनकी आकृतियों को अनूठे ढंग से अपनी शैली में ढालकर अपने खूबसूरत व प्रभावशाली चित्रों में शामिल करते हैं।

महान भारतीय चित्रकार **'सतीश गुजराल'** की कला–यात्रा में हम देखते हैं की चाह उनकी कला में **'अमूर्त कला'** विद्यमान है किन्तु उन्होंने महीन कारीगरी को कभी भी तिलजना नहीं दी। हर चित्र में उनका हुनर व शैली पर पकड़ का निखार देखा जा सकता है। वो कहते है की ''जैसे कविता में भाषा व शब्दावली का अनूठा सुमेल होता है इसी प्रकार मैंने 'अमूर्त कला' को वास्तविकता के साथ जोड़ा है।'' प्रसिद्ध कला समीक्षक–**'रिचर्ड बर्थोलोम्यू'** कहते है की ''सतीश गुजराल जो नहीं सुन पाते उसे देखते हैं, जिसे देखते हैं उसे पेंट करते हैं तथा जो वो पेंट करते हैं उसे सुनते हैं।''[2] सतीश गुजराल के बँटवारे पर बनाए गए चित्र तो महान हैं ही जो हमारे दिलो–दिमाग पर छा जाते हैं किन्तु उनकी 65 साल से भी ज्यादा समय की कला साधना में अनेक बदलाव व पड़ाव आए। वह न एक उच्चकोटि के चित्रकार ही हैं बल्कि एक **'म्युरलिस्ट'**, **'मूर्तिकार'**, **'आंतरिक–सज्जाकार'** तथा **'वास्तुकार'** भी हैं। आप ने अनेका–अनेक माध्यमों तथा शैलियों में अद्‌भुत तथा अविस्मरणीय कलाकृतियाँ बनाई तथा आपकी ख्याति विश्व की कला जगत् में सुनहरे अक्षरों में लिखी जाएगी। इनके रेखा–चित्रों में अजीबो–गरीब जानवर तथा पशु–पक्षिओं का मानव आकृतियों के साथ मिला हुआ आश्चर्यजनक मिश्रण मिलता है जैसे की नारी के साथ लिपटा हुआ साँप और कहीं मस्ती में उछलता घोड़ा व बैल जिसके सर पर चुपचाप बैठा पक्षी जो किसी दुसरी दुनिया से उड़कर आया हो। कहीं स्त्री तोते पर सवार है तो कभी कोई मानव अजीब सी आकृति वाले किसी जानवर को आलिंगन में है। अपने कोलाज में भी सतीश गुजराल ने खूबसूरत कला–योजना, टेक्स्चर तथा रेखा का उपयोग करते हुए दिलकश जानवर तथा पशु–पक्षियों का सुंदर ढंग से तोड़ –मरोड़ कर प्रदर्शन किया है।**(1)**

इस तरह उन्होंने मानव के सूक्ष्म विचारों, भावनाओं तथा बेकाबू आवेगों का चित्रण किया है। कई कलाकृतियाँ कुछ कामुक चेतना का संचार करती हैं। सरपट दौड़ते बेलगाम घोड़े बेकाबु समावेगों की छवि को प्रगटाते हैं जिसके आगे मानव असहाय महसूस करता प्रतीत होता है। इसी प्रकार शैतान लगने वाला भेड़ा तो कहीं दानविय भैंसा मानव के मन–मस्तिष्क पर छाया सा लगता है। इन उच्चस्तरीय कलाकृतियों में मानविय तथा अमानविय विचारों का सुंदर सजिला नाच है।

चित्रकार **'मंजीत बावा'** का जन्म पंजाब के छोटे से कस्बे 'धुरी' में तीज के दिन एक प्रकार से गौशाला में हुआ। जन्म से ही मंजीत को पशु–पक्षियों तथा जानवरों से बेहद प्रेम तथा लगाव था। वे अक्सर गॉव के बाहर एकान्त में बैठकर बाँसूरी बजाने के शौकीन थे क्योंकि लोग यह मानते थे कि घर में बाँसुरी बजाना अशुभ होता है और इसी कारण उनके पिता का लकड़ी के काम का व्यापार ठीक तरह नहीं चला। वह अपने घोड़े पर सवार होकर गॉव के बाहर चले जाते। कहा जाता है कि उनकी गाय उनके पिता से दवाई लेते वक्त बहुत विचलित हो जाती किन्तु मंजीत का हाथ लगते ही शाँत तथा प्रसन्न हो जाती थी।[3] मंजीत आज एक सूफी चित्रकार के नाम से जाने जाते हैं जिनकी कला में **'आधुनिकतावाद'** तथा **'लोक–कथा'** का सुंदर दर्शण है। वह 'बुल्ले शाह' तथा भारतीय पौराणिक कथाएँ सुनते न थकते थे। सूफी परंपरा में आपसी भाईचारा, परस्पर प्रेम व सबके सुख की कामना झलकती है इसलिए ही हम देखते हैं कि मंजीत बावा के चित्रों में कभी कोई हिंसा तथा आक्रोश का तत्व नहीं होता सिर्फ प्रेम, शाँती, सामजस्य का प्रवाह है।[4] उनकी कला में उनकी पवित्र आत्मा की तरह की एक स्वपन्नय संसार है जिसमें देवी देवता, नर–नारी, बाज़ीगर, पशु–पक्षी बहुत ही शाँत प्रवृत्ति से सजकर बैठे नज़र आते हैं। चटक रंगों तथा समतल पृष्ठभूमि में पिघलते विचारों के रूप में किसी ना किसी पशु –पक्षी का अवतार बनकर उभरते हैं।**(2)**

इनमें भावनाओं की बोछार है तथा कहीं उदासी, अकेलापन या कहीं अजीव सी रसिकता। खुले आकाश में उड़ती आकृतियाँ मंजीत बावा के कवि मन की वेदनाओं को हमारे सन्मुख लाकर खड़ा कर देती है। उनके चित्र बहुत लुभावनी रंग–संयोजना से ओत–प्रोत होते हैं जिनमें जानवरो व मानव का एक साथ एक पथ पर चलना तय लगता है।

'गोगी सरोज पाल' का जन्म 'निऊली' उत्तर प्रदेश में हुआ जो की आज भारत की अग्रणीय श्रेणी के चित्रकारों में शुमार है। गोगी ने भी पुरानी मिथक–चिन्हों व विभन्न देवी देवताओं के वाहनों जिसमें कई प्रकार के पशु–पक्षी व जानवर आते हैं का पूर्ण रूप से अध्ययन किया तथा उनकी आकृतियों के पीछ छिपी अनेक कथाओं तथा मान्यताओं को बारिकी से समझने का प्रयास किया। किन्तु उन्होंने इन सब मिथक आकृतियों को एक प्रकार की चुनौती देते हुए यह समझने की कोशिश की कि इस पुरूष प्रधान समाज में नारी को क्यों पिछे धकेल दिया जाता है और क्यों वह हर प्रकार की समानता की अधिकारी नहीं बन सकती।[5] अनेका अनेक कहानियाँ सुनाने वाली कभी हंसमुख तो कभी उदासीन गोगी सरोज पाल ने अपनी कला में अपने ही अर्थ ढूंढने शुरू किए।[6] वे मानती हैं कि इस विश्व में अब असमानताओं को खत्म करने का समय आ चुका है और वो अपनी कलाकृतियों के माध्यम से इन मिथक तथा वास्तविक चिन्हों व तत्वों को पूर्ण रूप से नए आयाम तथा अर्थ प्रदान करने की इच्छुक हैं इसलिए ही हम उनकी बेजोड़ कला शैली में कई

अद्भुत चित्रों का संचार पाते है जिनमें गोगी ने अनूठे तथा प्रभावशाली ढंग स नई मान्यताओं तथा नए माप–दंड़ों का उल्लेख करते हुए चित्र बनाए जिनमें भैंसे पर खड़ी **'महिषासुरमर्दिनी'**, शेर पर खड़ी **'हठयोगिनी'** व **'कामधेनु'** गाय**(3)** एक अद्‌भुत से आकार में शामिल हैं और वो एक पशु न होते हुए एक स्त्री है जिसको अपने ऊपर पूर्ण विश्वास है तथा अपनी शर्तों पर इस जीवन में विचरण कर सकती है।

प्रसिद्ध कवि **'फ़ैज़ अहमद फ़ैज़'** ने अपनी कुछ पंक्तियों में आवेगों व जुनून का बड़ा सुंदर विवरण किया है जिसका अर्थ है कि ''मानव के जीवन में खास तौर पर एक कलाकार के जीवन में आवेगों तथा मनोवेगों का बहुत बड़ा स्थान है और हर कलाकृति के पीछे इनका हाथ है।''

सुप्रसिद्ध चित्रकार **'सतवंत सिंह'** का जन्म वर्ष 1948 में शिमला में हुआ। बचपन से ही वे एकांत स्वभाव व पशु–पक्षियों से मोह करने वाले चित्रकार हैं। जंगलों में घूमना, पहाड़, जल धाराओ, चट्टानों, पेड़ों और प्रकृति की गोद में शाँत मन से बैठकर चिंतन करने का उन्हें शोंक है। घर में उन्होंने कबूतर, मुर्गें, बकरी, बत्तख, खरगोश व कुत्तों का साथ पाया जिन्हें उन्होंने बाखूबी निहारा तथा उनके स्वभाव व हाव–भावों को समझा जो लगभग मनुष्यों की तरह ही व्यवहार करते हैं और वे मानते हैं की बहुत से मनुष्य भी पशु–पक्षियों की तरह व्यवहार करते हैं। अभी तक मानव पूरी तरह विकसित नहीं हुआ। प्रसिद्ध कला समीक्षक व कवयित्री **'निरूपमा दत्त'**, सतवंत सिंह की कला–यात्रा को बयान करते हुए लिखती हैं की ''सतवंत सिंह के चित्रों को निहारना एक अत्यंत ही संवेदनशील प्रक्रिया है। हर कलात्मक तत्व के पीछे एक पशु –पक्षी बाखूबी से उभरता है जिसके हाथ–पाँव तथा कई बार चहरे भी मानव की तरह लगते हैं। वह इस पृथ्वी पर रची जा रही नित–नई सर्कस और जीवन चक्कर का आध्यात्मिक तौर पर मंथन करते हैं।'' हर जीव व मानव एक नाजुक संतुलन में अपने आप को आधुनिक जीवन शैली के सुखों व दुखों, वेदनाओं, असमानताओं, संघर्षों व प्राप्तियों से जूझ रहा पाता है और उनकी सूक्ष्म से भी सूक्ष्म कलात्मक चिंताओं व इच्छाओं का वर्णन इन अद्‌भुत पशु–पक्षियों की जुबान से बाखूबी होता है।**(4)**

प्रसिद्ध कला–इतिहासकार व कला समीक्षक– **'डा0 बी.एन. गोस्वामी'** कहते हैं कि ''सतवंत की अनूठी कलाकृतियों में एक अजब सी रहस्यमय सृष्टि की झलक पाई जाती है जिसमें समय थम सा गया लगता है और उनके पशु–पक्षी मानव के साथ लुकाछिपी करते प्रतीत होते हैं। कहीं नन्दी बैल तीखे पहाड़ की चोटी पर एकांत खड़ा है तो कहीं कौं–कौं करते कौवें व मिनमिनाते मेमने एक गाथा सुनाते हुए विचित्र माहौल पैदा करते हैं। वे खुद ही प्रश्न करते हैं तथा जवाब भी खुद ही देते हैं।''[7] सृष्टि की रचना के नाच का दर्शन हम उनकी उच्चकोटी की कलाकृतियों में शक्तिशाली ढंग से उकेरी छवियों में पाते है जो दर्शक को मंतर–मुग्ध कर एक नई दुनिया में ले जाते हैं।

मानव की कलात्मक संरचना में इन भारतीय समकालीन प्रसिद्ध चित्रकारों का महत्त्वपूर्ण योगदान है जिन्होंने इस सृष्टि में विचरते अपने सहजीवों को अपने विचारों का वाहन बनाया।

संदर्भ

1.भट्टाचार्य, डा0 डी.सी.; 1997, *'पंचजन्य'–द पेनटैड़ ऑफ पंजाब आर्टिस्ट,* खंड–11, पंजाब ललित कला अकादमी, चण्डीगढ़, पृष्ठः **11–12**

2.दत्ता, संतों ; 2000, *सतीश गुजराल–सिलेक्टिड़ वर्कस,* ललित कला अकादमी, नई दिल्ली, पृष्ठः3

3.वही ; पृष्ठः **5**

4.मैडोक्स, जॉर्जीना ; अगस्त 12, 2011, *सूफी हू पेंटिड़ द स्काई रेड, द इंडियन एक्सप्रेस।*

5.राधिका आर्ट इनिश्यटिव एण्ड आर्ट एण्ड़ एस्थेटिक, नई दिल्ली ; फरवरी 2013, *गोगी सरोज पाल कामधेनु... अ विष–फुल्फिलिंग काओ (सूचीपत्र),* ऑस्टिर आर्टिस्त आर्ट, दिल्ली, पृष्ठः **9**

6.सूज़ैन, निशा ; अक्टूबर 15, 2011, *गो गो गोगी,* तहलका मैगजीन, खंड–8, अंक 41, नई दिल्ली

7.गोस्वामी, बी.एन. ; 1981, द हार्ट रीज़नस, द ट्रिब्यून।

Plate No. 1

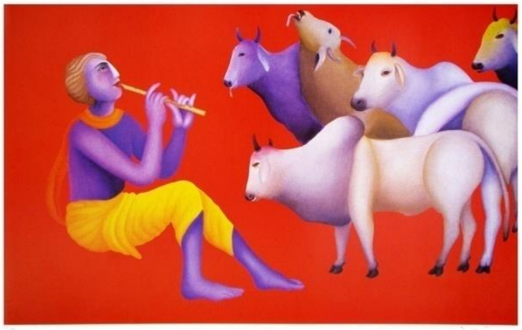

Plate No. 2

Plate No. 3

Plate No. 4